ISBN : 978-93-84299-34-7

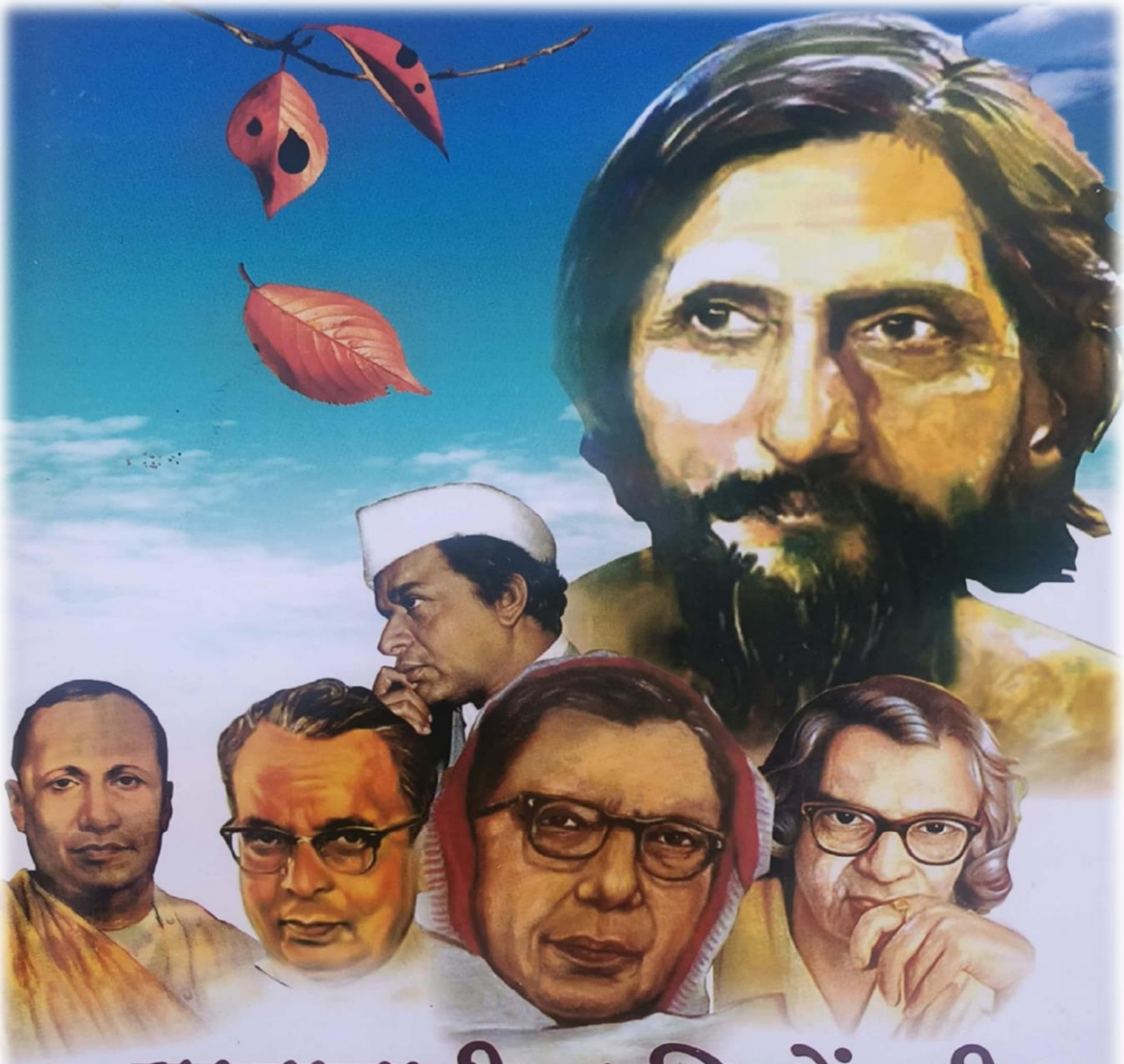

छायावादी कवियों की निबंध साधना और निराला

संयुक्ता कुमारी सिंह

ISBN : 978-93-84299-34-7

छायावादी कवियों की निबंध साधना और निराला

संयुक्ता कुमारी सिंह

किशोर विद्या निकेतन
वाराणसी

 ISBN : 978-93-84299-34-7

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास में छायावादी कवियों का योगदान गद्य रचना के क्षेत्र में भी बहुत महत्वपूर्ण है। हिन्दी गद्य आधुनिक युग की ही देन है। यदि द्विवेदी युग में इसे शुद्ध और परिष्कृत रूप प्राप्त हुआ तो छायावादी कवियों, पंत, निराला और महादेवी ने वहाँ एक ओर गद्य के भाव को भी समृद्ध किया तथा अपनी रचनात्मिका शक्ति का वैशिष्ट्य निबंधों के माध्यम से प्रकट किया। छायावादी कवियों ने इन निबंधों में सर्वप्रथम सौन्दर्य, कल्पना और रस भाव को समाविष्ट किया। इनकी शैली, प्रतिभा और विद्वत्ता अपने आप में अतुलनीय है। ये कवि स्वभाव से थे, अतः इनका स्वछन्दतावाद वस्तु की अपेक्षा व्यक्ति की अभिव्यक्ति पर विशेष बल देता है। हमारे आलोच्य का निबंध साधना के क्षेत्र में योगदान अपरिमित है। महाकवि निराला ने उपन्यास, रेखाचित्र, कहानी, निबंध, जीवनी और स्फुट गद्य साहित्य द्वारा अपने व्यापक गद्य प्रेम का भी परिचय दिया। इस युग के निबंधों में भी वस्तुपरक शैली की अपेक्षा आत्मपरक शैली को मान्यता दी गई। प्रसाद के निबंधों पर उनके व्यक्तित्व की छाप प्रत्यक्ष दिखाई देती है। वस्तुतः छायावादी कवियों ने गद्य की प्रत्येक विधा का युगीन विचारधारा की कसौटी पर कसकर अपनाया। ये सभी कवि किसी न किसी पत्रिका से भी सम्बद्ध थे। निराला के निबंधों को लेकर वैसी कोई रचना सामने नहीं आती, जिसमें तुलनात्मक दृष्टिकोण को अपनाकर सभी छायावादियों के साथ निराला के निबंधात्मक कृतियों की तुलना की गई हो। उनके गद्य साहित्य को लेकर प्रमिला विला और निर्मल जिन्दल ने अवश्य काम किया है। डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने निराला का गद्य, डॉ० प्रेम प्रकाश भट्ट ने निराला का गद्य साहित्य और डॉ० रामविलास शर्मा ने निराला और निराला की साहित्य साधना में इस संदर्भ में सामग्री प्रस्तुत की है। डॉ० विश्वम्भर नाथ उपाध्याय ने निराला का साहित्य और साधना शीर्षक पुस्तक में उनके निबंधों की चर्चा की है। निराला के गद्य ग्रंथ में डॉ० भोलानाथ, निबंधकार निराला में डॉ० सरला शुक्ल ने उनके निबंधों पर संक्षेप में विचार किया है किन्तु ये उक्त रचनाएँ इस एक विधा निबंध की संपूर्ण चर्चा नहीं मिलती। वस्तुतः निराला केवल काव्य रचना के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परिचय समान रूप से देते हैं। वे अपनी शैली में शब्द विधान द्वारा वहाँ भी सबसे पृथक् हैं। उनका शब्द चयन अन्यों से भिन्न हैं। उनके निबंध अनेक प्रकार के हैं – सामाजिक, साहित्यिक, जीवनी परक, संस्मरणात्मक तथा दार्शनिक, धार्मिक ये तत्कालीन समाज की ज्वलंत समस्याओं पर भी विचार करते हैं और दार्शनिक धार्मिक विचारों पर भी अपना निर्णय उसी प्रकार देते हैं। यहाँ समस्त छायावादी कवियों के निबंधों पर विचार

करते हुए महाकवि निराला को केन्द्रित कर यह दिखाने का प्रयास है कि उनके निबंध अनेक प्रकार के विषयों से सम्बद्ध होते हुए भी किस प्रकार अपनी प्रतिभा के पूर्ण प्रकाश से उस क्षेत्र को भी वे प्रकाशान्वित कर पाते हैं।

यह पुस्तक कुल मिलाकर उपसंहार सहित नौ अध्यायों में समाविष्ट है। प्रस्तावना के अर्न्तगत विषय के महत्व और अब तक इस विषय पर हुए शोध कार्यों एवं आलोचनात्मक कृतियों का व्यौरा उपस्थित किया गया है तथा शोध की आवश्यकता पर बल दिया गया है। प्रथम अध्याय में छायायुगीन निबंधकारों का परिचय तथा उनकी चतुष्टयी (प्रसाद, पंत, निराला, और महादेवी) के निबंध रचना शिल्प पर विस्तार से विचार दिया गया है। द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत विषय वस्तु की दृष्टि से निबंधों की कोटियां विभाजन और वर्गीकरण का विस्तृत वर्णन है। इसका उद्देश्य यह है कि इन निबंधों के कोटिक्रम के अन्तर्गत निराला का स्थान स्वाभाविक रूप से निरूपित हो सके। तृतीय अध्याय में छायावादी युग के अन्य रचनाकारों की वैयक्तिकता और निबंध निर्माण प्रक्रिया में उसका योगदान अभिबर्णित है। चतुर्थ अध्याय में निराला का निबंध साहित्य और उसकी कोटियों को निर्धारित किया गया है। पंचम अध्याय में निराला के निबंधों का वैचारिक स्तर विवेचित है और उनकी विशेषताओं का विश्लेषण करना अभीष्ट है। षष्ठ अध्याय में निबंध रचना शिल्प के निकष पर निराला के निबंधों को परखने की चेष्टा की गई है। इसमें विशेष रूप से उनके व्यक्तित्व के पक्ष को उद्घाटित करते हुए निबंधों में उसकी छाप को विश्लेषित किया गया है। सप्तम अध्याय में निराला के गद्य लेखन और उनके विशेषतः निबंधों की रचना पर पड़े बाह्य प्रभावों को विश्लेषित करने से सम्बद्ध है। अष्टम अध्याय में निबंधों की भाषा का अनुशीलन करते हुए निराला की शैली को उनकी भाषा के साथ छायावादी कवियों की निबंध साधना और निराला

विश्लेषित करने का प्रयास है। भाषा पर निराला को पूर्ण अधिकार था, अतः भाषा को पूर्णता प्रदान करने वाले अंगोपांगों की मीमांसा की गई है। उपसंहार के अन्तर्गत अन्य निबंधकारों से तुलना करते हुए छायायुगीन निबंधकारों के परिप्रेक्ष्य में उनका मूल्यांकन किया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक समस्त छायायुगीन कवियों के निबंधात्मक परिप्रेक्ष्य को समक्ष रखते हुए निराला की निबंध साधना को विस्तार के साथ प्रकट करती है। कहा भी गया है कि कवियों के लिए यदि गद्य कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। इस आधार पर यह पुस्तक उन महान् कवियों का जिन्होंने एक युग का निर्माण किया उनकी साहित्यिक साधना का प्रकर्ष प्रस्तुत करता है।

 ISBN : 978-93-84299-34-7

इस पुस्तक के समस्त दृष्टिकोण और उसके शीर्षक सुनिश्चित करने में हमारे श्रद्धेय गुरूदेव डॉ० नन्द किशोर तिवारी, आचार्य व अध्यक्ष, स्नातकोत्तर विभाग हिन्दी, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, का पूर्ण योगदान रहा है। स्नातकोत्तर कक्षाओं में भी उनसे महाकवि निराला को समझने का मुझे सौभाग्य मिला था। उसी क्रम में उनकी निबन्ध साधना के ऊपर शोध करने की प्रेरणा भी मिली थी। अतः उस कृपा प्रसाद का ही मूर्त रूप इसे माना जाए। हमारे परम पूज्य पिता श्री यमुना प्रसाद जी, माताजी सीता देवी ने हमारे शैक्षिक जीवन को सदा प्रोत्साहन कर स्वर दिया है। इस इस पुस्तक की पूर्णता पर वे हमसे विशेष प्रसन्न होंगे। अतः मैं अपनी संपूर्ण श्रद्धा उन्हें अर्पित करती हूँ। हमारे पतिदेव श्री अजय सिंह ष्इंजीनियरष् ने मुझे सभी कार्यों से अधिक इस कार्य को महत्व देते हुए चिंताओं से पृथक रखा। मैं उनके प्रति भी अपनी श्रद्धा समर्पित करती हूँ। हमारे श्वसुर श्री बालकृष्ण सिंह जी व माता सुशीला देवी ने भी मेरे शैक्षणिक जीवन को आगे बढ़ाने में बाधाविहीन वातावरण प्रदान किया है, हम हृदय से नतमस्तक हैं। आदरणीय श्री गिरिनाथ सिंह जी, राज्य मंत्री, बिहार सरकार और प्राचार्य डॉ० मिथिला सिंह की प्रेरणा हमारे जीवन में सर्वाधिक संबल का कार्य करती रही है। हमारे भाइयों में रमेश कु० सिंह, अधिवक्ता, व्यवहार न्यायालय, सासाराम, उदय प्रताप सिंह, निर्भय प्र० सिंह ये सभी सदा प्रेरणात्मक सिद्ध हुए हैं और हमारी सहायता के लिए हर क्षण तैयार रहे हैं। इस संदर्भ में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इनके मार्गदर्शन और सहयोग के अभाव में यह कार्य इस रूप में संभव नहीं होता। पुस्तक संकलन सामग्री एकत्र करने के लिए मुझे निराला साहित्य मंदिर स्थित गुरूदेव की पुस्तकालय से एक ही स्थान पर प्रभूत सामग्री प्राप्त हो गई है। स्वामी शिवानन्द जी शोध संस्थान स्थित यह पुस्तकालय हमारे जैसे अन्य शोधीजनों के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है। मैं उन सभी लेखकों के प्रति अपना आभार प्रकट करना धर्म मानती हूँ जिनके ग्रंथों का आलोड़न किया गया तथा उनसे सहायता ली गई। संदर्भ ग्रंथ में उनका उल्लेख कर दिया गया है। अंत में मैं परम प्रभु को प्रणाम करती हूँ जिनकी कृपा से मेरी शोध यात्रा के चरण यहाँ तक बढ़े हैं।

डा. संयुक्ता कुमारी सिंह

 ISBN : 978-93-84299-34-7

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

छायायुगीन निबंधकारों का परिचय तथा उनकी चतुष्टयी का निबंध रचना–शिल्प – 1

द्वितीय अध्याय

विषय वस्तु की दृष्टि से निबंधों की कोटियाँ, विभाजन और वर्गीकरण – 39

तृतीय अध्याय

छायावादी युग के अन्य रचनाकारों की वैयक्तिता और निबंध निर्माण प्रक्रिया में उसका योगदान – 44

चतुर्थ अध्याय

निराला का निबंध साहित्य और उसके कोटिक्रम का निर्धारण – 63

पंचम अध्याय

निराला के निबंधों का वैचारिक स्तर और उनकी कतिपय विशेषताओं का विश्लेषण – 94

षष्ठ अध्याय

निबंध रचना शिल्प के निकष पर निराला व निबंध साहित्य – 108

सप्तम अध्याय

निराला के गद्य लेखन पर बाह्य प्रभाव – 133

अष्टम अध्याय

निबंधों की भाषा का अनुशीलन तथा निराला के निबंध का एतद् विषयक दृष्टि से विश्लेषण – 143

नवम अध्याय

उपसंहार

(अन्य निबन्धकारों से तुलना और छायायुगीन निबन्धकारों के परिदृश्य में उनका मूल्यांकन) – 160

उपस्कारक ग्रंथों की सूची – 171

आत्म-परिचय

नाम	:	डॉ. संयुक्ता कुमारी सिंह
पति का नाम	:	श्री अजय कुमार सिंह (BE Civil)
पिता का नाम	:	श्री यमुना प्रसाद सिंह
माता का नाम	:	श्रीमती सीता देवी
जन्म-तिथि	:	09-01-1966 (नव जनवरी उन्नीस सौ छयासठ)
स्थाई पता	:	मुहल्ला–सहिजना, थाना–गढ़वा, जिला–गढ़वा, झारखण्ड
शैक्षणिक योग्यता	:	एम.ए., पी-एच.डी., व्याख्याता, विभाग-हिन्दी
नियुक्ति	:	1998, गोपीनाथ सिंह महिला महाविद्यालय, गढ़वा
प्राचार्या	:	2015, गोपीनाथ सिंह महिला महाविद्यालय, गढ़वा
शैक्षणिक कार्य	:	1) छायायुगीन निबंधकारों का रचना शिल्प 2) निराला के निबंधों का शैलीगत विवेचन 3) राष्ट्रीयता और ओजस्विता के कवि : निराला 4) स्वातन्त्रोत्तर उपन्यासों में नारी 5) काव्य पुरुष : रामधारी सिंह 'दिनकर'
सेमीनार	:	राष्ट्रीय सेमीनार, पंचायती राज में भारतीय के सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन में साहित्य। U.G.C. एक दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला प्रायोजित, अनुसंसाधन और उच्च शिक्षा का मूल्यांकन

किशोर विद्या निकेतन
वाराणसी

Books Available on flipkart amazon.com

Price : ₹ 350.00
ISBN : 978-93-84299-34-7
9 789384 299347
Year 2016